नवकार मंत्र

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायणं
नमो लोए सव्व साहूणं
एसो पंच नमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥

यह मंत्र जैन धर्म का मूल मंत्र है और इसमें पाँच बड़ी महान आत्माओं को नमस्कार किया गया है, और उनको किया हुआ नमस्कार हमारे लिए सब पापों का नाशक व मंगलकारी है।

अर्थः

नमो अरिहताणं	अरिहन्तों को नमस्कार हो। (Bow Down to Conquerors of Attachment & Hate)
नमो सिद्धाणं	सिद्धों (Liberated Souls) को नमस्कार हो।
नमो आयरियाणं	आचार्यों (Preceptors) को नमस्कार हो।
नमो उवज्झायणं	उपाध्यायों (Teachers of Knowledge) को नमस्कार हो।
नमो लोए सव्व-साहूणं	लोक (Universe) में सब साधुओं (Sages) को नमस्कार हो।
एसो पंच नमोक्कारो	यह पाचों को किया हुआ नमस्कार।
सव्व-पावप्पणासणो	सब पापों (All Sins) का नाश करने वाला है।
मगंलाणं च सव्वेसिं	सभी मंगलों (Auspicious) में
पढ़मं हवइ मंगलं	प्रथम (First) मंगल है।

प्रश्न-उत्तर

प्र. 1. मंत्र किसे कहते हैं?

उ. शब्दों का ऐसा समूह (Group) जिनकी संख्या कम हो और भाव (Expression of Thoughts) अधिक हों और जिसको चितारने (Chant) से मन शान्त हो, उसे मंत्र (Mantra) कहते हैं।

प्र. 2. अरिहंत किसे कहते हैं?

उ. a. जिन आत्माओं के 4 कर्म। [ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय (Deluding)] अन्तराय (Obstructing)] समाप्त हो गए हैं, ऐसी आत्माओं को हम अरिहंत या अरिहंत भगवान कहते हैं। OR

उ. b. जिन आत्माओं ने राग और द्वेष (Attachment & Hate) पर विजय (Conquor) पा ली है, उन्हें हम अरिहंत कहते हैं।

प्र. 3. सिद्ध किसे कहते हैं?

जिन आत्माओं के 8 कर्म समाप्त हो गए हैं, उन्हें हम सिद्ध या सिद्ध भगवान कहते हैं। प्रथम 4 कर्म तो अरिहंत भगवान वाले और शेष 4 कर्मों के नाम इस प्रकार हैं:–

1. वेदनीय कर्म (Pertaining to Feelings);
2. नाम कर्म (Body Physique Determing);
3. गोत्र कर्म (Status);
4. आयुष्य कर्म (Life Span).

प्र. 4. अरिहंत और सिद्ध भगवान में अन्य क्या अंतर (differences) होते हैं।

उ.

	अरिहंत	**सिद्ध**
1.	चार कर्म नष्ठ हुए हैं	आठ कर्म नष्ठ हो गए हैं
2.	शरीर धारी हैं	अशरीरी, मोक्ष में विराजमान हैं
3.	हमें दिखाई देते हैं	हमें दिखाई नहीं देते
4.	धर्म का उपदेश देते हैं	उपदेश नहीं देते हैं।

प्र. 5. आचार्य किसे कहते हैं?

उ. ऐसे मुनिराज जो स्वयं आचार (Code of Conduct) का पालन (Follow) करते हैं और अपने अधीन अन्य साधु-सतियों, श्रावक-श्राविकाओं से पालन करवाते हैं। (He is like a Principal of a School)

प्र. 6. उपाध्याय किसे कहते हैं?

उत्तरः ऐसे मुनिराज जो बहुत अधिक ज्ञानी हैं और दूसरों को भी ज्ञान देते हैं, उन्हें हम उपाध्याय कहते हैं। (He is like a Senior Teacher of a School or Professor of a College)

प्र. 7. साधु किसे कहते हैं?

उत्तरः जो व्यक्ति 5 महाव्रतों (Five Vows) का पालन (Follow) करता है उसे साधु कहते हैं। जैन दर्शन के अनुसार 5 महाव्रत इस प्रकार से हैं:

साधु-साध्वी के 5 महाव्रत

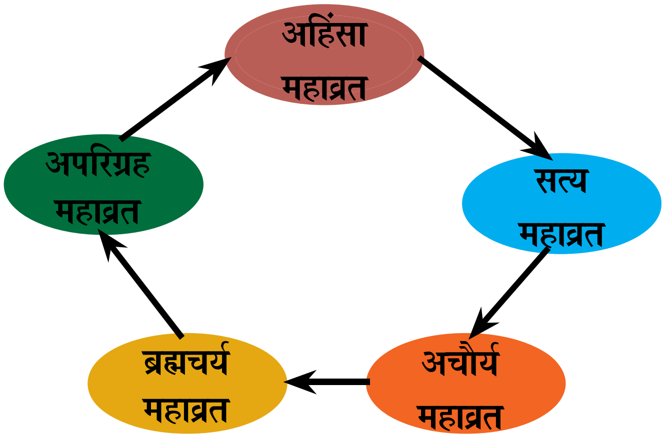

1. अहिंसा महाव्रत (Vow not to kill any Living Being)
2. सत्य महाव्रत (Vow not to lie in any Circumstances)
3. अचौर्य महाव्रत (Vow not to steal Any Thing)
4. ब्रह्मचर्य महाव्रत (Vow to be Chaste for the Whole Life)
5. अपरिग्रह महाव्रत (Vow to Renounce Property etc.)

आचार्य, उपाध्याय भी साधु के नियमों का तो पालन करते ही हैं। साधु के ये 5 महाव्रत मूल गुण भी कहलाते हैं। इन व्रतों का पालन प्रत्येक साधु-साध्वी के लिए Compulsory है। इन गुणों के अलावा हर साधु-साध्वी में अपने-2 कुछ अलग गुण हो सकते हैं, जिन्हें हम उत्तर गुण कहते हैं और साधु-साध्वी अपने सामर्थ्य के अनुसार उनका पालन करते हैं।

गुरु-वन्दन सूत्र

तिक्खुतो आयाहिणं पयाहिणं करेमि।
वन्दामि नमंसामि सक्कारेमि, सम्माणेमि ॥

कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं।
पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥

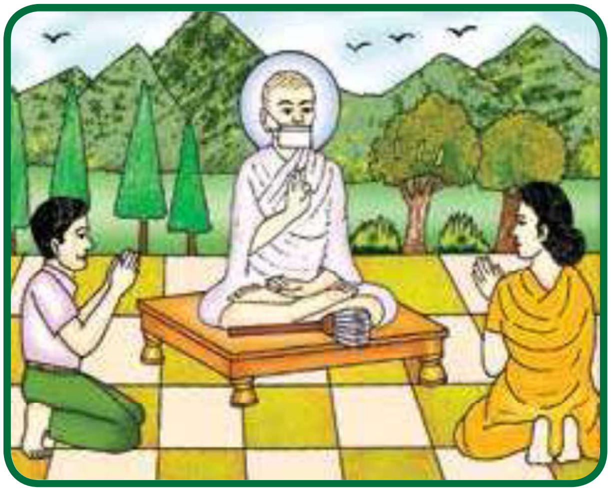

जैसे हम स्कूल में अपने Teachers को Good Morning or Good Afternoon बोलकर उनके प्रति Respect दिखाते हैं, उसी प्रकार हम अपने धर्म गुरुओं के प्रति 'गुरु वन्दन सूत्र' पढ़कर तीन बार विधि सहित वन्दना-नमस्कार करते हैं।

अर्थः

तिक्खुतो	तीन बार (Three Times)
आयाहिणं पयाहिणं	दाहिनी ओर से प्रदक्षिणा
करेमि	करता हूँ (I do)
वन्दामि, नंमसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि	(स्तुति, नमस्कार, सत्कार, सम्मान) (Bow down, Kneel Down, Honour, Pay Respect)
कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं	कल्याण रूप, मंगल रूप, धर्मदेव, ज्ञान स्वरूप (Blisses, Auspicious, Divine, Knowledge in Carnate)

पज्जुवासामि	उपासना करता हूँ (I Worship)
मत्थएण	मस्तक झुकाकर
वंदामि	वंदना करता हूँ (Bow Down)

प्र. नमस्कार किसे कहते हैं?

उ. स्वयं को छोटा तथा बड़ों को बड़ा समझते हुए, उसके सूचक स्वयं की काया को धरती की ओर झुकाना नमस्कार है।

प्र. सत्कार और सम्मान में क्या अतंर है?

उ. सत्कार में स्वयं की Body को झुकाना है और सम्मान में अपने मन के भावों को झुकाना है।

प्र. गुरु वंदना की विधि क्या है?

उ. गुरुओं के समीप आकर दोनों हाथों को Fold करके Clockwise Direction में घुमाते हुए तीन बार 'गुरु-वन्दना सूत्र' पढ़ते हुए अपने 5 अगों (2 हाथ, 2 पैर, 1 मस्तक) को जमीन पर टिकाकर नमस्कार करना।

प्र. गुरुओं को तीन बार वंदना क्यों की जाती है?

उ. गुरुओं के पास सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन व सम्यक चारित्र (Right Knowledge, Right Perception & Right Character) नामक 3 गुण (Quality Gem) होते हैं। वे गुण हम में भी आ जाएं अतः इन्हीं भावों से हर एक गुण के लिए एक वन्दना की जाती है।

प्र. उपासना किसे कहते हैं?

उ. गुरुओं के निकट बैठना उपासना कहलाती है। गुरुओं के पास बैठते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारी वजह से उनको असुविधा न हो और उनसे धर्मचर्चा के अलावा व्यर्थ की बातें न करें। (i.e. We should sit near to our Guruji in such a way that they don't feel inconvenience and should not discuss Worldly Things except Dharma).

प्र. कल्याण और मंगल किसे कहते हैं?

उ. मोक्ष को प्राप्त कराने वाले को कल्याण कहते हैं और पाप रूपी विघ्न को दूर करने वाले को मंगल कहते हैं।